Indian Journal of Commerce, Business & Management (IJCBM)

A Peer Reviewed Research journal of Commerce, Business & Management

ISSN : 3108-057X (Online)
3108-1282 (Print)
Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.- 95-99
©2025 **IJCBM**
https:// ijcbm.gyanvividha.com

Author's :

NILESH KUMAR
Research Scholar, Dept. of Commerce, Veer Narmad South Gujarat University, Surat, Gujarat, India

Corresponding Author :

NILESH KUMAR
Research Scholar, Dept. of Commerce, Veer Narmad South Gujarat University, Surat, Gujarat, India

भारत में गरीबी पर कोविड-19 (कोरोनावायरस) का प्रभाव

सारांश : कोविड-19 (कोरोनावायरस) महामारी ने भारत में गरीबी को कई स्तरों पर प्रभावित किया। लॉकडाउन और आर्थिक मंदी के कारण बेरोजगारी बढ़ी, प्रवासी मजदूरों को अपने गाँव लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा और निम्न आय वर्ग के लोगों को गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। हालाँकि सरकार ने कई योजना और अन्य सामाजिक सुरक्षा उपाय लागू किए, लेकिन ये प्रयास गरीबी की मूलभूत समस्याओं को पूरी तरह हल करने में पर्याप्त नहीं थे। इस अध्ययन में कोविड-19 महामारी के समय देश में प्रकाशित विभिन्न प्रकार के शोध पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, शोध प्रबंधों, साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाओं और वेबसाइटों आदि का सहारा लेकर गरीबी पर कोविड-19 के प्रभावों का वर्णनात्मक रूप में उल्लेख किया गया है।

विशिष्ट शब्द : कोविड-19, गरीबी, बेरोजगारी, प्रवासी, आर्थिक संकट, सामाजिक सुरक्षा और मूलभूत समस्याओं।

परिचय : कोविड-19 (कोरोनावायरस) एक संक्रामक वायरस है, जो 2019 के अंत में चीन के वुहान शहर में जन्मा और जल्द ही वैश्विक महामारी के रूप में प्रसिद्ध हो गया। यह वायरस संक्रमित व्यक्ति के खांसने, छींकने, या बातचीत करने से श्वसन तंत्र से निकली श्वसन बूंदों के अन्य लोगों को संपर्क में आने और फिर चेहरे को छूने से संक्रमित करती हैं।

देश में प्रथम लॉकडाउन सबसे पहले 23 मार्च को केरल राज्य से ही किया गया और बाकी अन्य राज्यों में 25 मार्च को व्यक्तियों, सूचनाओं और वस्तुओं की आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया गया। देश

.

में 2020 में लगाए गए लॉकडाउन के कारण लाखों प्रवासी कामगार बेरोजगार होने को मजबूर हो गए, जिससे मध्यम और निम्न वर्ग के लोगों की आजीविका प्रभावित होने के साथ ही गरीबी में भी वृद्धि हुईं। प्यू रिसर्च सेंटर 2021 के अनुसार, कोविड-19 महामारी के कारण 2020 के अंत तक भारत में 7.5 करोड़ लोग फिर से गरीबी रेखा के नीचे चले गए। यहाँ गरीबी का तात्पर्य ऐसी अवस्था से है जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपने मूलभूत आवश्यकताओं यथा भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की पूर्ति करने में स्वयं को असमर्थ पता हैं। वर्ल्ड बैंक और नीति आयोग (2019) के अनुमानों के अनुसार, भारत में 2019 तक लगभग 27 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला गया था, और गरीबी दर घटकर लगभग 10-15% रह गई थी।

साहित्य समीक्षा : विभिन्न शोध अध्ययनों के आधार पर, कोविड-19 महामारी और गरीबी से संबंधित विषय पर कुछ महत्वपूर्ण समीक्षात्मक अध्ययन निम्नलिखित है: -

सुलेमान., और के, रविंद्र. (जनवरी से मार्च 2022) ने अपने लेख में बताया है कि कोविड-19 महामारी ने भारत जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था अत्यधिक नुकसान पहुंचाया, जिस कारण भारत में पहले से ही मौजूद गरीबी और आय की असमानता के और भी बढ़ने की संभावना बनी हुई है। इसके परिणामस्वरुप देश में घरेलू हिंसा, प्रवास, आत्महत्या और मानसिक बीमारी आदि में भी वृद्धि होगी।

शर्मा, जे. पी. (जुलाई से अगस्त 2020) में अपने पत्र में बताया है कि वैश्विक मंदी, औद्योगिक उत्पादन का बंद होना, बेरोजगारी और गरीबी आदि सभी कोरोना के परिणाम हैं। यह लंबी चलने वाली महामारी है, जिसके साथ देश में रहने वाले सभी लोग को रहना सीखना होगा।

चंद्रा, द., और शरण, श. (मार्च 2022) ने अपने लेख में बताया है कि गरीबी देश में अधिक बढ़ चुकी है और गरीबी से बाहर निकालने के लिए जारी योजनाओं का लाभ कुछ ही गरीबों को प्राप्त हो पा रहा है, जिससे बाकी बचे गरीब इन योजनाओं से अभिन्न हैं। देश में अगर निरंतर सकारात्मक प्रयास की धारा चलती रही तभी एक दिन गरीबों का उन्मूलन संभव हो पाएगा।

भारत सरकार की आर्थिक समीक्षा (2021-22) में बताया गया है कि कोविड-19 की पहली लहर ने अर्थव्यवस्था को दूसरी लहर से अधिक प्रभावित किया हैं। इस कारण कोविड-19 महामारी के चुनौतियों के लिए भारत सरकार ने समाज में कमजोर वर्गों एवं व्यापार क्षेत्र के लिए एक विस्तृत सुरक्षा जाल का गठन किया हैं। देश में विश्व के सबसे बड़े मुफ्त भोजन कार्यक्रम को लागू किया गया। देश में आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रत्यक्ष नगद हस्तांतरण और छोटे व्यवसायों के लिए राहत उपायों को जल्दी से स्थापित किया गया।

उद्देश्य : इस लेख का मुख्य उद्देश्य भारत देश में कोविड-19 (कोरोनावायरस) महामारी का गरीबी पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना हैं।

शोध प्रविधि : इस शोध अध्ययन के विश्लेषण के लिए द्वितीयक आंकड़ों यथा प्रकाशित शोध पत्रों, पुस्तकों, शोध प्रबंधों, साप्ताहिक पत्रिकाओं और वेबसाइटों आदि का उपयोग किया गया है।

चर्चा विश्लेषण : कोविड-19 महामारी ने वैश्विक और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर गरीबी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन इसका सबसे ज्यादा असर भारत जैसे विकासशील देशों में रहने वाले वैसे लोगों पर अत्यधिक पड़ा है, जहाँ पहले से ही एक बड़ी आबादी गरीबी रेखा के नीचे थी। इस प्रकार देश में गरीबी बढ़ाने वाले सभी मूलभूत समस्याओं को कोरोनावायरस महामारी ने प्रभावित किया जो निम्नलिखित है:

i.**बेरोजगारी और आजीविका पर प्रभाव**

देश में लगे लॉकडाउन के कारण लाखों श्रमिकों ने अपनी नौकरियाँ खो दीं, जिससे बेरोजगारी दर में तीव्र वृद्धि हुई और उनके आय के स्रोत खत्म हो गए। शहरी गरीबों के लिए आजीविका की स्थिति और भी गंभीर हो गई। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी के अनुसार, अप्रैल 2020 में भारत की बेरोजगारी दर 23.5% तक पहुँच गई, जो महामारी से पहले मात्र 7-8% थी।

ii.असंगठित और अनौपचारिक क्षेत्र पर प्रभाव

भारत की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा असंगठित और अनौपचारिक क्षेत्र पर आधारित है, जहाँ काम करने वाले मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा का लाभ प्राप्त नहीं होता हैं। लॉकडाउन के कारण यह क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुआ, जिससे गरीब वर्ग की आजीविका पर सीधा असर पड़ा।

iii.स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रभाव

गरीब वर्ग के लोगों की स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच सीमित थी, जिससे वे महामारी के प्रभावों से अधिक प्रभावित हुए। निजी अस्पतालों में इलाज महंगा था, जबकि सरकारी अस्पतालों में संसाधनों की कमी थी। गरीब लोग आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ प्राप्त नहीं कर सके, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और बिगड़ गई।

iv.**खाद्य असुरक्षा और भुखमरी**

महामारी के दौरान आर्थिक संकट के कारण गरीब समुदायों की आय कम होने से वे बुनियादी आवश्यकताओं, विशेष रूप से भोजन, को पूरा करने में असमर्थ हो गए। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, कोविड-19 के कारण लाखों लोगों को भुखमरी और कुपोषण का सामना करना पड़ा।

v.शिक्षा पर प्रभाव

स्कूलों के बंद होने से गरीब बच्चों की शिक्षा बाधित हुई। ऑनलाइन शिक्षा में डिजिटल संसाधनों की आवश्यकता होती है, लेकिन गरीब परिवारों के पास स्मार्टफोन, लैपटॉप और इंटरनेट कनेक्शन जैसी बुनियादी सुविधाएँ नहीं थीं, जिससे वे शिक्षा से वंचित हो गए। इसने उनके भविष्य के आर्थिक अवसरों को और सीमित कर दिया, जिससे गरीबी का दायरा बढ़ा हैं।

vi.प्रवासी मजदूरों पर प्रभाव

भारत में प्रवासी मजदूरों को महामारी के दौरान सबसे अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लॉकडाउन के कारण उनके पास रोजगार के अवसर नहीं बचे, जिससे वे अपने गाँव लौटने के लिए मजबूर हुए। घर लौटने के बाद भी, वे बेरोजगार रहे और इससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी बेरोजगारी और गरीबी में वृद्धि हुई।

vii.मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

बेरोजगारी, खाद्य असुरक्षा और वित्तीय कठिनाइयों के कारण गरीब परिवारों में मानसिक तनाव बढ़ा। विश्व स्वास्थ्य संगठन (2021) के अनुसार, महामारी के दौरान मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ, जैसे चिंता और अवसाद, गरीब वर्ग में अधिक देखी गईं। यह तनाव उनके कार्यक्षमता और उत्पादकता को प्रभावित करता है, जिससे वे आर्थिक रूप से और कमजोर होते जाते हैं।

viii.आर्थिक असमानता पर प्रभाव

महामारी का अमीरों की तुलना में गरीबों पर अधिक प्रभाव पड़ा है जिस कारण अमीर और गरीब के बीच की खाई में और भी वृद्धि हो गई है, जिससे आर्थिक असमानता बढ़ी हैं। प्यू रिसर्च सेंटर (2021) के अनुसार, भारत में 3.2 करोड़ लोग मध्यम वर्ग से निकलकर गरीबी रेखा के नीचे आ गए है, जिससे सामाजिक-आर्थिक असमानता बढ़ी हैं।

इस प्रकार कोविड-19 महामारी ने भारत में गरीबी को कई तरीकों से प्रभावित किया है, जिससे आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न हुई। यह महामारी विशेष रुप से गरीब और वंचित वर्ग के लिए अधिक विनाशकारी साबित हुई।

निष्कर्ष : कोविड-19 महामारी ने पहले से ही गरीबी की स्थिति में रहने वाले समुदाय को सबसे अधिक प्रभावित किया हैं। महामारी ने भारत में खासकर असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले गरीब और प्रवासी मजदूरों को अपना रोजगार छोड़ने को विवश किया जिस कारण बेरोजगारी दर में वृद्धि हुई। स्वास्थ्य सेवाओं में एकाएक कमी उत्पन्न होने लगी, खाद्य असुरक्षा और पोषण की स्थिति में भी गिरावट देखी गई और इसके साथ ही डिजिटल विभाजन ने गरीब बच्चों को शिक्षा से वंचित किया जैसे कारक गरीबी की स्थिति और आर्थिक असमानता को बढ़ाने का कार्य किया हैं। इस प्रकार कोविड-19 महामारी ने गरीबी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हालांकि, सरकार ने राहत पैकेज और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के माध्यम से मदद करने का प्रयास किया। ये उपाय अल्पकालिक राहत देने में तो सफल रहे, लेकिन गरीबी की मूलभूत समस्याओं को हल करने में सीमित प्रभावी रहे।

यह निष्कर्ष दर्शाता है कि कोविड-19 महामारी का गरीबी पर व्यापक और बहुआयामी प्रभाव पड़ा है।

सुझाव : कोविड-19 महामारी ने गरीबी को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई, लेकिन दीर्घकालिक रणनीतियों और मजबूत सुझावों के माध्यम से इसके प्रभावों को कम किया जा सकता है, जो निम्नलिखित है: -

- गरीब और अनौपचारिक श्रमिकों को स्थायी रोजगार के अवसर देने के लिए स्किल डेवलपमेंट और स्वरोजगार जैसी दीर्घकालिक योजनाएँ को बढ़ावा देना आवश्यक है।
- गरीबों के लिए सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं को पहुँचाने के लिए सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक प्रभावी रूप से सरकारी निवेश को बढ़ाया जाना चाहिए।
- ऑनलाइन शिक्षा तक गरीब वर्ग को शामिल करने के लिए सरकारी सहायता प्रदान की जानी चाहिए, ताकि गरीब छात्रों की पहुँच डिजिटल संसाधनों यथा स्मार्टफोन, लैपटॉप और इंटरनेट कनेक्शन तक सुनिश्चित हो सके।
- गरीबों को प्राप्त होने वाली सामाजिक सुरक्षा योजना यथा मौजूदा बेरोजगारी भत्ता, खाद्य सुरक्षा और वित्तीय सहायता इत्यादि योजनाओं को और अधिक समावेशी बनाया जाना चाहिए।

संदर्भ :

1. अफ़रीदी, एफ., ढिल्लन, ड., एंड रॉय, एस. (2021). कोविड-19 संकट ने शहरी गरीबों को कैसे प्रभावित किया है? एक फोन सर्वेक्षण के निष्कर्ष? इंडियाज फॉर इंडिया. रिट्रीव्ड फॉर्म- https://www.ideasforindia.in/topics/poverty-inequality/how-has-the-covid-19-crisis-affected-the-urban-poorfindi ngs-from-a-phone-survey-iiihindi.html
2. ड्रेजी, जे., एंड खेड़ा, आर. (2020). माइग्रेंट वर्कर्स एंड कोविड-19: ए क्राइसिस ऑफ इनविजिबिलिटी. इकोनामिक एंड पॉलीटिकल वीकली, 55(20), 15-17.

3. फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन (एफएओ). (2021). द स्टेट ऑफ़ फ़ूड सिक्योरिटी एंड न्यूट्रिशन इन द वर्ल्ड. यूनाइटेड नेशंस. रिट्रीव्ड फॉर्म https://www.fao.org
4. आईसीएमआर. (2021). इंपैक्ट ऑफ़ कोविड-19 ऑन हेल्थकेयर एक्सेस इन इंडिया. इंडिया कौंसिल ऑफ़ मेडिकल रिसर्च.
5. सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनामी (सीएमआईइ). (2020) अनइंप्लॉयमेंट इन इंडिया: ए स्टैटिसटिकल एनालिसिस. सीएमआईइ रिपोर्ट्स. रिट्रीव्ड फॉर्म https://www.cm ie.com/
6. डब्ल्यूएचओ. (2021). मेंटल हेल्थ एंड कोविड-19. वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन.
7. व्यास, एम. (2020). अनइंप्लॉयमेंट रेट स्पीक्स इन इंडिया ड्यू टू कोविड-19 लॉकडाउन. सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनामी (सीएमआईइ).
8. डब्ल्यूएचओ. (2020). कोरोनावायरस डिजीज (कोविड-19) पांडेमिक. वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन. रिट्रीव्ड फॉर्म https://www.who.int
9. वर्ल्ड बैंक. (2020). द इंपैक्ट ऑफ कोविड-19 ऑन द इंडियन इकोनामी. वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट.
10. मेहरोत्रा, एस. (2021). सोशल प्रोटक्शन इन टाइम्स ऑफ़ कोविड-19: इंडिया'एस एक्सपीरियंस. जर्नल ऑफ़ डेवलपमेंट स्टडीज, 57(2), 130-145.
11. एनसीईआरटी. (2021) ऑनलाइन एजुकेशन एंड द डिजिटल डिवाइड: चैलेंजेस फॉर पुअर स्टूडेंट्स. नेशनल कौंसिल ऑफ़ एज्युकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग.
12. प्यू रिसर्च सेंटर. (2021). हाऊ कोविड-19 रिशेप्ड द ग्लोबल मिडिल क्लास. प्यू रिसर्च रिपोर्ट.
13. वर्ल्ड बैंक. (2020). इंडिया'एस रिस्पांस टू कोविड-19: इकनोमिक एंड सोशल मेजर्स. वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट.
14. सिंह, एस . कुमार. (2023). स्टडी ऑफ़ द इंपैक्ट ऑफ़ कोविड-19 कोरोनावायरस ओं थे फार्मर् और एग्रीकल्चर सेक्टर इन इंडिया. नव आर्थिकी, ए जनरल ऑफ़ सोशियो इकोनामिक इश्यूज़. ईयर 33, वॉल्यूम 31, नंबर. -1, 55-59.
15. चंद्रा, द., और शरण, श. (मार्च 2022). बिहार में गरीबी की स्थिति एवं इसके मूल्यांकन हेतु कार्यक्रमों का विश्लेषण. इंटरनेशनल जर्नल का नोबेल रिसर्च एंड डेवलपमेंट. वॉल्यूम 7, इश्यू 3, 44-60.
16. शर्मा, जी. पी. (जुलाई से अगस्त 2020). कोरोना और बदलता भारत. पुस्तक संस्कृति, साहित्य और संस्कृति की द्विमासिक पत्रिका. वर्ष 5, अंक 4, पेज 2.
17. सुलेमान., और के, रविंद्र. (जनवरी से मार्च 2022). कोविड-19 महामारी का भारत की सामाजिक आर्थिक दशा पर प्रभाव. शोध समागम. ईयर 05, वॉल्यूम 05, इश्यू 01, 181-190.
18. इंडिया बजट. (2022). आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22. Retrieved from- https://www.in diabudget.gov.in/budget2022-23/econ omicsurvey/doc/eschapter/hechap01.pdf
19. वर्ल्ड बैंक (2019). "पॉवर्टी एंड शेयर प्रोस्पेरिटी 2019: प्राइसिंग टुगेदर द पॉवर्टी पजल". द वर्ल्ड बैंक ग्रुप.
20. प्यू रिसर्च सेंटर (2021). "मिलियंस ऑफ इंडियनस स्लिप्ड इंटू पॉवर्टी अमिड कॉविड-19 पांडेमिक". प्यू रिसर्च सेंटर.